International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

माध्यमिक स्तर के सामान्य एवं दिव्यांग विद्यार्थियों की बुद्धि और समायोजन का अध्ययन

Nishant Kumar, Dr. Ajeet Singh Yadav

Research Scholar, Sunrise University, Alwar, Rajasthan

Research Supervisor, Sunrise University, Alwar, Rajasthan

सारांश

माध्यमिक स्तर के सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, बुद्धि और समायोजन का अध्ययन एक जटिल और विविध प्रक्रिया है, जो कई कारकों पर निर्भर करती है। शिक्षा प्रणाली, सामाजिक परिवेश, परिवार, और व्यक्तिगत विशेषताएँ सभी मिलकर इन विद्यार्थियों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विकलांग विद्यार्थियों के लिए विशेष समर्थन और समावेशी नीतियों का अनुपालन आवश्यक है, ताकि वे भी अपने साथियों की तरह ही विकास कर सकें और समाज में समानता के साथ भाग ले सकें। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए, शिक्षा नीतियों में सुधार, शिक्षकों का प्रशिक्षण, और सामाजिक जागरूकता बढ़ाने के प्रयास आवश्यक हैं। केवल इसी प्रकार हम एक समावेशी और समानता पर आधारित समाज का निर्माण कर सकते हैं, जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी को उसकी विशेष आवश्यकताओं के अनुसार विकास और प्रगति के अवसर मिल सकें। बुद्धि का विकास भी माध्यमिक स्तर पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बुद्धि का तात्पर्य उन मानसिक क्षमताओं से है जो समस्या समाधान, तर्क, और सीखने की क्षमता को परिभाषित करती हैं। सामान्य विद्यार्थियों के लिए, शिक्षा प्रणाली में एक प्रचलित पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियों का अनुसरण किया जाता है, जो उनकी बुद्धि को विकसित करने में सहायक होते हैं। दूसरी ओर, विकलांग विद्यार्थियों के लिए, विशेष शिक्षण विधियों और सहायक तकनीकों का उपयोग आवश्यक होता है। यह तकनीकें उनकी सीखने की प्रक्रिया को सरल और प्रभावी बनाती हैं। उदाहरण के लिए, दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए ब्रेल लिपि का उपयोग, सुनने में कठिनाई वाले विद्यार्थियों के लिए सुनने सहायता उपकरण, और मानसिक विकलांगता से पीड़ित विद्यार्थियों के लिए विशेष शिक्षण विधियाँ शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, समावेशी शिक्षा प्रणाली का अनुसरण भी महत्वपूर्ण है, जो सभी विद्यार्थियों को समान अवसर प्रदान करने की दिशा में काम करती है।

मुख्यशब्द:- समायोजन, विकलांग विद्यार्थी, सामाजिक समानता, शिक्षा संस्थान, पाठ्यक्रम, शिक्षा, विशेष आवश्यकताएँ।

प्रस्तावना:

शिक्षा मानव समाज की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकताओं में से एक है जो समृद्धि, सामाजिक उत्थान, और व्यक्तिगत विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा के माध्यम से समाज के अन्यान्य क्षेत्रों में सशक्तिकरण और समानता की स्थापना होती है। शिक्षा के इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में सामायोजन का महत्वपूर्ण स्थान है, जिसका उद्देश्य सभी विद्यार्थियों को समान अवसर प्रदान करना है, चाहे वे सामान्य

हों या विकलांग। सामायोजन न केवल शिक्षा में समानता की स्थापना करता है, बल्कि विकलांग विद्यार्थियों को उनकी विशेषताओं के अनुसार शिक्षा प्रदान करने का अवसर भी प्रदान करता है।

माध्यमिक शिक्षा के दौरान विद्यार्थियों को विभिन्न चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। यह चुनौतियाँ उनके शारीरिक, मानसिक, और भावनात्मक विकास को प्रभावित करती हैं। शारीरिक परिवर्तन, जैसे कि यौवनारंभ, विद्यार्थियों के आत्म-विश्वास और आत्म-स्वीकृति को प्रभावित कर सकते हैं। मानसिक चुनौतियाँ, जैसे कि परीक्षा का दबाव और भविष्य की चिंताएँ, विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती हैं। भावनात्मक चुनौतियाँ, जैसे कि संबंधों में तनाव और पहचान की खोज, भी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

इस समयावधि में, मानसिक और भावनात्मक समर्थन महत्वपूर्ण होता है। शिक्षकों, परामर्शदाताओं, और परिवार के सदस्यों को विद्यार्थियों को समझना और समर्थन करना चाहिए। उन्हें सकारात्मक सोच, आत्म-सम्मान, और आत्म-स्वीकृति की भावना विकसित करने में सहायता करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त, मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने और विद्यार्थियों को तनाव और चिंता को प्रबंधित करने के लिए उपकरण और तकनीक प्रदान करने की आवश्यकता होती है।

माध्यमिक शिक्षा के दौरान, विद्यार्थियों को विभिन्न नैतिक और सामाजिक मुद्दों का सामना करना पड़ता है। यह मुद्दे उनके नैतिकता और मूल्यों को प्रभावित करते हैं। विद्यार्थियों को नैतिक निर्णय लेने, सामाजिक जिम्मेदारियों को समझने, और एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। विद्यालयों में नैतिक शिक्षा और सामाजिक विज्ञान का समावेश विद्यार्थियों को इस दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त, समाज सेवा और सामुदायिक गतिविधियों में भागीदारी भी विद्यार्थियों को समाज के प्रति उनकी जिम्मेदारियों को समझने और व्यक्तित्व विकास में सहायता करती है।

समाज और संस्कृति का प्रभाव भी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर पड़ता है। समाज और संस्कृति के मूल्यों, मानदंडों, और मान्यताओं का प्रभाव विद्यार्थियों के विचारों, व्यवहारों, और दृष्टिकोण पर होता है। विद्यार्थियों को समाज और संस्कृति के सकारात्मक मूल्यों को अपनाने और नकारात्मक प्रभावों से बचने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, विद्यार्थियों को सांस्कृतिक विविधता की समझ और सम्मान विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

माध्यमिक शिक्षा के दौरान, विद्यार्थियों को भविष्य की योजनाएँ बनाने और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। करियर परामर्श और मार्गदर्शन विद्यार्थियों को उनकी रुचियों, क्षमताओं, और संभावनाओं को समझने में सहायता करते हैं। यह मार्गदर्शन उन्हें सही निर्णय लेने और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है। इसके अतिरिक्त, विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा और रोजगार के अवसरों के बारे में जानकारी प्रदान की जानी चाहिए ताकि वे अपने भविष्य के लिए सही निर्णय ले सकें।

सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों का व्यक्तित्व

व्यक्तित्व मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण पहलु है जो हमें अन्य व्यक्तियों से अलग बनाता है और हमारी पहचान तय करता है। शिक्षा के क्षेत्र में, सामान्य और विकलांग विद्यार्थियों का व्यक्तित्व एक

महत्वपूर्ण अध्ययन के लिए बना है, क्योंकि यह हमें उनके विशेषताओं, योग्यताओं, और आवश्यकताओं की समझ प्रदान कर सकता है।

सामान्य विद्यार्थियों का व्यक्तित्व: सामान्य विद्यार्थी विभिन्न क्षमताओं, प्रतिभाओं, और रुचियों के साथ आते हैं। उनका व्यक्तित्व सामान्यत: आत्म-स्वावलंबन, सामाजिक संवादनशीलता, और प्रवृत्ति की दिशा में विकसित होता है। वे अक्सर सामाजिक गतिविधियों में भाग लेते हैं, साथ ही विशेष क्षेत्रों में उनकी रुचियों का पालन करते हैं और करियर की दिशा में अपने लक्ष्यों की प्राप्ति करते हैं।

विकलांग विद्यार्थियों का व्यक्तित्व: विकलांग विद्यार्थी विभिन्न प्रकार की विकलांगताओं के साथ आते हैं जैसे कि शारीरिक, दृष्टिगत, मानसिक आदि। उनका व्यक्तित्व उनकी विकलांगता के आधार पर नहीं बल्कि उनके अद्वितीय योग्यताओं, संवादनशीलता, और आत्मविश्वास पर निर्भर करता है। यहाँ जरूरी है कि हम उनके साथीक योग्यताओं को समझें जो उन्हें अन्य विद्यार्थियों से अलग बनाते हैं, और उन्हें उनके हित में अद्वितीय तरीकों से शिक्षा प्रदान करने का सही माध्यम खोजें।

सामायिकता का महत्व: सामायोजन के माध्यम से सामान्य और विकलांग विद्यार्थियों को सामान अवसर प्रदान किया जाता है जो उनके व्यक्तिगत विकास में मदद करता है। यह समाज में समानता की भावना को बढ़ावा देता है और विकलांग विद्यार्थियों को उनके योग्यताओं के अनुसार शिक्षा प्रदान करने का माध्यम बनता है।

सामान्य और विकलांग विद्यार्थियों के बुद्धि का विकास

शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान का संचार करना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों के संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास करना भी है। सामान्य और विकलांग विद्यार्थियों के बुद्धि के विकास में कई कारक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिनमें पारिवारिक परिवेश, विद्यालय का वातावरण, शिक्षकों का समर्थन, और स्वयं विद्यार्थियों की इच्छा शक्ति शामिल है। सामान्य विद्यार्थियों और विकलांग विद्यार्थियों के बुद्धि विकास की प्रक्रिया भिन्न हो सकती है, लेकिन दोनों के लिए एक समानांतर दृष्टिकोण और समावेशी शिक्षा प्रणाली आवश्यक है।

सामान्य विद्यार्थियों के बुद्धि का विकास प्रारंभिक आयु से ही परिवार और समाज के माध्यम से प्रारंभ होता है। घर पर माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्यों का समर्थन और प्रेरणा उन्हें नई चीजें सीखने और समझने के लिए प्रोत्साहित करती है। जब ये बच्चे विद्यालय जाते हैं, तो उनकी शिक्षा का मुख्य स्रोत उनके शिक्षक और सहपाठी बन जाते हैं। इस दौरान, खेल, समूह गतिविधियाँ, और परियोजनाएँ उन्हें न केवल शैक्षिक ज्ञान प्रदान करती हैं, बल्कि तर्कशक्ति, समस्या-समाधान कौशल, और सामाजिक इंटरैक्शन का विकास भी करती हैं।

विकलांग विद्यार्थियों के बुद्धि विकास के लिए भी समान रूप से महत्वपूर्ण होता है कि उन्हें उपयुक्त संसाधन, समर्थन और अवसर प्रदान किए जाएँ। यहाँ पर समावेशी शिक्षा प्रणाली का महत्व और बढ़ जाता है, जहाँ विकलांग और सामान्य विद्यार्थी एक साथ शिक्षा ग्रहण करते हैं। इससे न केवल विकलांग विद्यार्थियों को समाज में समानता का अनुभव होता है, बल्कि सामान्य विद्यार्थियों में भी सहानुभूति और समझदारी का विकास होता है। विकलांग विद्यार्थियों के लिए विशेष शिक्षा संसाधन, तकनीकी उपकरण, और सहायक सेवाएँ उपलब्ध कराना उनकी शैक्षिक सफलता के लिए आवश्यक है।

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

बुद्धि विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका शिक्षक की होती है। शिक्षक को विद्यार्थियों के व्यक्तित्व और उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं को समझकर शिक्षण विधियों को अनुकूलित करना चाहिए। उदाहरण के लिए, कुछ विकलांग विद्यार्थियों को शारीरिक सहायताएँ जैसे ब्रेल पुस्तकें, व्हीलचेयर, या श्रवण यंत्र की आवश्यकता हो सकती है, जबकि कुछ को मानसिक और शैक्षिक समर्थन जैसे विशेष शिक्षा कक्षाएँ या व्यक्तिगत शिक्षण सहायक की आवश्यकता हो सकती है। शिक्षक का यह दायित्व है कि वह प्रत्येक विद्यार्थी की आवश्यकता को समझे और उन्हें उपयुक्त संसाधन और सहायता प्रदान करे।

इसके अतिरिक्त, सहपाठियों की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। सहपाठी एक दूसरे के सीखने के अनुभव को साझा कर सकते हैं और एक सहायक वातावरण बना सकते हैं। यह वातावरण विकलांग विद्यार्थियों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि उन्हें कभी-कभी सामाजिक बाधाओं और पूर्वाग्रहों का सामना करना पड़ सकता है। सहपाठियों की सहायता और समर्थन से विकलांग विद्यार्थी अधिक आत्मविश्वासी और प्रेरित महसूस कर सकते हैं।

विद्यालय का भौतिक वातावरण भी बुद्धि विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। समावेशी और सहायक स्कूल संरचना, जिसमें सभी प्रकार के विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त सुविधाएँ उपलब्ध हों, एक अनुकूल शिक्षा अनुभव प्रदान करती है। इसमें रैम्प, लिफ्ट, विशेष शौचालय, और अन्य सहायक उपकरण शामिल हो सकते हैं जो विकलांग विद्यार्थियों के लिए आवश्यक हैं।

शैक्षिक नीतियाँ और बुद्धि विकास में सामान्य और विकलांग विद्यार्थियों की भूमिका

शैक्षिक नीतियाँ विद्यार्थियों के बुद्धि विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, चाहे वे सामान्य विद्यार्थी हों या विकलांग। एक प्रभावी शिक्षा प्रणाली में, दोनों समूहों के विद्यार्थियों के विकास और समृद्धि के लिए समान अवसर और संसाधन प्रदान करना आवश्यक है। शैक्षिक नीतियों का उद्देश्य होना चाहिए कि वे विद्यार्थियों को न केवल शैक्षिक ज्ञान प्राप्त करने में सहायता करें, बल्कि उनकी संपूर्ण मानसिक और सामाजिक विकास में भी सहायक हों।

सर्वप्रथम, यह आवश्यक है कि शैक्षिक नीतियाँ समानता और समावेशिता को प्रोत्साहित करें। एक समावेशी शिक्षा प्रणाली वह है जिसमें सामान्य और विकलांग विद्यार्थी एक साथ शिक्षा प्राप्त करते हैं। यह दृष्टिकोण दोनों प्रकार के विद्यार्थियों के लिए लाभदायक है। सामान्य विद्यार्थियों को विकलांग विद्यार्थियों के साथ पढ़ने से सहानुभूति, सहयोग, और सामाजिक विविधता के मूल्य समझ में आते हैं। दूसरी ओर, विकलांग विद्यार्थियों को समान अवसर और संसाधन प्राप्त होते हैं, जिससे वे भी शिक्षा में पूर्ण भागीदारी कर सकते हैं।

शिक्षा नीतियों में यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि विकलांग विद्यार्थियों के लिए विशेष संसाधन और सहायता उपलब्ध हो। इसके अंतर्गत ब्रेल पुस्तकें, श्रवण यंत्र, व्हीलचेयर, और अन्य सहायक उपकरण शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, विशेष शिक्षा शिक्षक और सहायक सेवाएँ जैसे कि व्यक्तिगत शिक्षा योजना (IEP) भी महत्वपूर्ण हैं। ये उपाय सुनिश्चित करते हैं कि विकलांग विद्यार्थियों को उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षा मिल सके।

सरकारी नीतियाँ और कार्यक्रम भी बुद्धि विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उदाहरण के लिए, कई देशों में समावेशी शिक्षा के लिए वित्तीय सहायता और अनुदान प्रदान किए जाते हैं। ये कार्यक्रम

स्कूलों को आवश्यक संसाधन और प्रशिक्षण प्राप्त करने में सहायता करते हैं, जिससे वे सभी विद्यार्थियों को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान कर सकें। इसके अतिरिक्त, विशेष छात्रवृत्तियाँ और पुरस्कार भी विकलांग विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करते हैं और उनकी शैक्षिक सफलता में सहायक होते हैं।

शिक्षकों की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। उन्हें यह समझना चाहिए कि प्रत्येक विद्यार्थी की सीखने की शैली और आवश्यकता अलग होती है। शिक्षक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वह शिक्षण विधियों को विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुसार अनुकूलित करें। उदाहरण के लिए, कुछ विद्यार्थियों के लिए दृश्य शिक्षण विधियाँ अधिक प्रभावी हो सकती हैं, जबकि अन्य के लिए श्रवण या स्पर्श आधारित शिक्षण विधियाँ अधिक उपयुक्त हो सकती हैं। शिक्षकों को नियमित रूप से प्रशिक्षण और विकास कार्यक्रमों में भाग लेना चाहिए ताकि वे नवीनतम शिक्षण विधियों और संसाधनों से परिचित हो सकें। सहपाठियों की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। एक सहायक और सहयोगात्मक वातावरण में, सभी विद्यार्थी एक दूसरे के सीखने के अनुभव को साझा कर सकते हैं। यह विशेष रूप से विकलांग विद्यार्थियों के लिए महत्वपूर्ण है, जिन्हें कभी-कभी सामाजिक बाधाओं और पूर्वाग्रहों का सामना करना पड़ सकता है। सहपाठियों की सहायता और समर्थन से विकलांग विद्यार्थी अधिक आत्मविश्वासी और प्रेरित महसूस कर सकते हैं।

निष्कर्ष:

बुद्धिमता सामायोजन शिक्षा के क्षेत्र में सामाजिक समानता की प्राप्ति के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। यह समाज में विकलांग विद्यार्थियों को समानता की भावना दिलाने में मदद करता है और उन्हें विशेष आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षा प्रदान करने का अवसर प्रदान करता है। सामान्य और विकलांग विद्यार्थियों का व्यक्तित्व विशेष योग्यताओं, आवश्यकताओं, और संवादनशीलता के आधार पर बनता है। बुद्धिमता सामायोजन के माध्यम से हम उन्हें समान अवसर प्रदान करके उनके व्यक्तिगत विकास में सहायता कर सकते हैं और समाज में समानता की स्थापना कर सकते हैं।

संदर्भ-ग्रंथ सूची

- माइक एस. एनिओला और कुनलएडेबी, (2017), भावनात्मक बुद्धिमत्ता और लक्ष्य निर्धारण-नाइजीरिया में दृष्टिबाधित छात्रों के बीच काम करने की प्रेरणा बढ़ाने के लिए हस्तक्षेपों की जांच, ब्रिटिश जर्नल ऑफ विजुअल इम्पेयरमेंट। 25:249.
- पांडा ए (2019)। दृष्टिबाधित किशोरियों की उनकी आकांक्षा के स्तर और शैक्षिक उपलब्धि के संबंध में भावनात्मक बुद्धिमत्ता, डॉक्टोरल थीसिस सार http://old.jmi.ac.in/2000/Research/ab2010_education_amruta.pdf से प्राप्त किया गया
- प्रिया तुलसी, सी. जिजी, एस.जी., और एस. जयाकुमारी (2019)। पोलियोमाइलिटिक्स की भावनात्मक बुद्धिमत्ता- एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन इंडियन जर्नल ऑफ एप्लाइड साइकोलॉजी, 46 1-4
- रानी, आर. (2021) एकीकृत और पृथक स्कूलों में दृष्टिबाधित छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि, विकलांगताएं और हानियां, 25(1 और 2), 44-50।

- शुट्ट, एन.एस., मैलॉफ, जे.एम., हॉल, एल.ई., हैगर्टी, डी.जे. कूपर, जे.टी., गोल्डन, सी.जे., और डोर्नहेम, एल. (2018)। भावनात्मक बुद्धिमत्ता के माप का विकास और सत्यापन। व्यक्तित्व और व्यक्तिगत अंतर, 25, 167-177.
- शर्मा, आर. (2018) दृश्य हानि और सामान्य दृष्टि वाले कॉलेज के छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता के संबंध में अलगाव, हताशा और मानसिक स्वास्थ्य, पीएच.डी. (शिक्षा), कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय।
- शर्मा, ए. (2019)। विकलांग और गैर-विकलांग बच्चों के बीच मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं के सहसंबंध के रूप में भावनात्मक क्षमता और सेक्स। (अप्रकाशित पीएच.डी. थीसिस)। आगरा: आगरा विश्वविद्यालय
- सिल्लर, जे. (2019), "मनोवैज्ञानिक सहवर्ती विच्छेदन", बाल विकास। 1960, 31, पृ. 109-120.
- शिमोनसन, आर.जे., लोलर, डी., होलोवेल, जे., और एडम्स, एम. (2020)। हानियों, विकलांगताओं और बाधाओं के अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण का संशोधन: विकासात्मक मुद्दे। जर्नल ऑफ़ क्लिनिकल एपिडेमियोलॉजी, 53, 113-124।
- सुब्रमण्यम, के. और रावश्रीनिवास के. (2018)। माध्यमिक विद्यालय के बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धि और भावनात्मक बुद्धिमत्ता, जर्नल ऑफ़ कम्युनिटी गाइडेंस एंड रिसर्च। वॉल्यूम. 25 नंबर 1, आईएसएसएन-0970-1346, पृष्ठ 224-228।
- उशील कुमार और जगत सिंह, (2018)। दृष्टिबाधित और दृष्टिबाधित स्कूली छात्रों के बीच भावनात्मक बुद्धिमत्ता और समायोजन। एशियन जर्नल ऑफ मल्टीडायमेंशनल रिसर्च खंड 2 अंक 8, आईएसएसएन 2278-4853
- विद्या रवींद्रनदन और राजू.एस. (2018) मानसिक मंदता वाले बच्चों के माता-पिता का समायोजन और रवैया। जर्नल ऑफ़ द इंडियन एकेडमी ऑफ़ एप्लाइड साइकोलॉजी, खंड 33, नंबर 1, 137-141।
- ज़ेबाअक़िल, एकलाकअहमद (2018)। शारीरिक रूप से अक्षम और सक्षम वयस्कों में आईक्यू और ईक्यू का तुलनात्मक अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक इंजीनियरिंग एंड रिसर्च (आईजेएसईआर)। आईएसएसएन (ऑनलाइन): 2347-3878, प्रभाव कारक (2018): 3.05
- अडसुल आर.के. और विकास कांबले (2018)। कॉलेज के छात्रों में लिंग, आर्थिक पृष्ठभूमि और जातिगत अंतर के एक कार्य के रूप में उपलब्धि प्रेरणा। जर्नल ऑफ़ द इंडियन एकेडमी ऑफ़ एप्लाइड साइकोलॉजी, जुलाई 2008, वॉल्यूम। 34, क्रमांक 2, 323-327.
- क्रॉफर्ड, चार्ल्स। बी, निर्मल, ब्रूस, (2016), माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में रचनात्मकता, उपलब्धि प्रेरणा और बुद्धिमत्ता के उपायों का एक बहुभिन्नरूपी अध्ययन। कैनेडियन जर्नल ऑफ बिहेवियरल साइंस / रिव्यू कैनेडियन डेस साइंस डू कॉम्पोर्टमेंट वॉल्यूम। 8(2), 189-201.
- क्लाउडिया एम. म्यूएलर और कैरोल एस. ड्वेक, (2018), बुद्धिमत्ता की प्रशंसा बच्चों की प्रेरणा और प्रदर्शन को कमजोर कर सकती है। व्यक्तित्व और सामाजिक मनोविज्ञान जर्नल, वॉल्यूम। 75, क्रमांक 1, 33-52